नेहरू बाल पुस्तकालय

एक यात्रा

चित्र एवं कथा

जगदीश जोशी

nbt.india
एकः सूते सकलम्

nbt.india
एकः सूते सकलम्

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

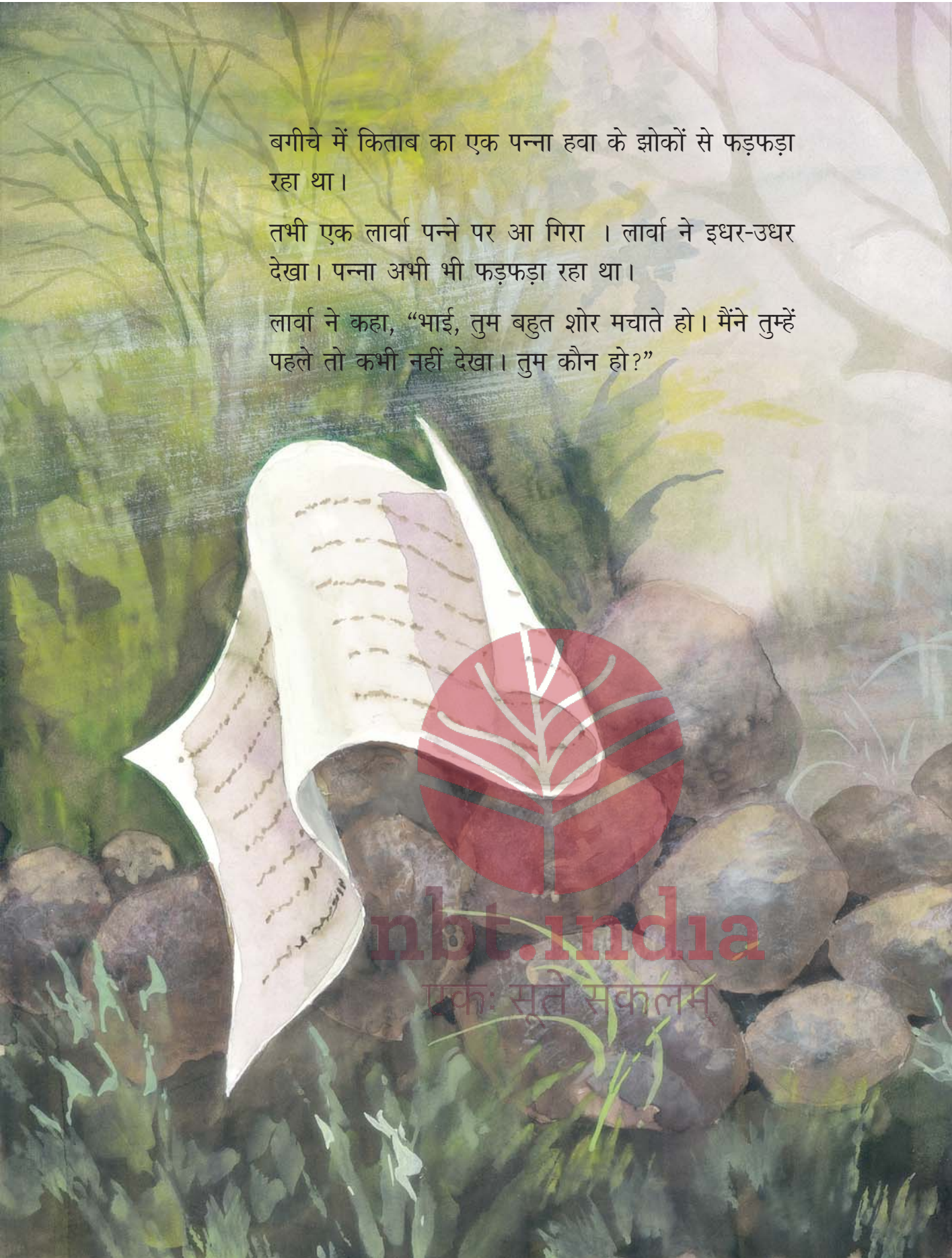

बगीचे में किताब का एक पन्ना हवा के झोकों से फड़फड़ा रहा था।

तभी एक लार्वा पन्ने पर आ गिरा । लार्वा ने इधर-उधर देखा। पन्ना अभी भी फड़फड़ा रहा था।

लार्वा ने कहा, "भाई, तुम बहुत शोर मचाते हो। मैंने तुम्हें पहले तो कभी नहीं देखा। तुम कौन हो?"

nbt.india
एकः सूते सकलम्

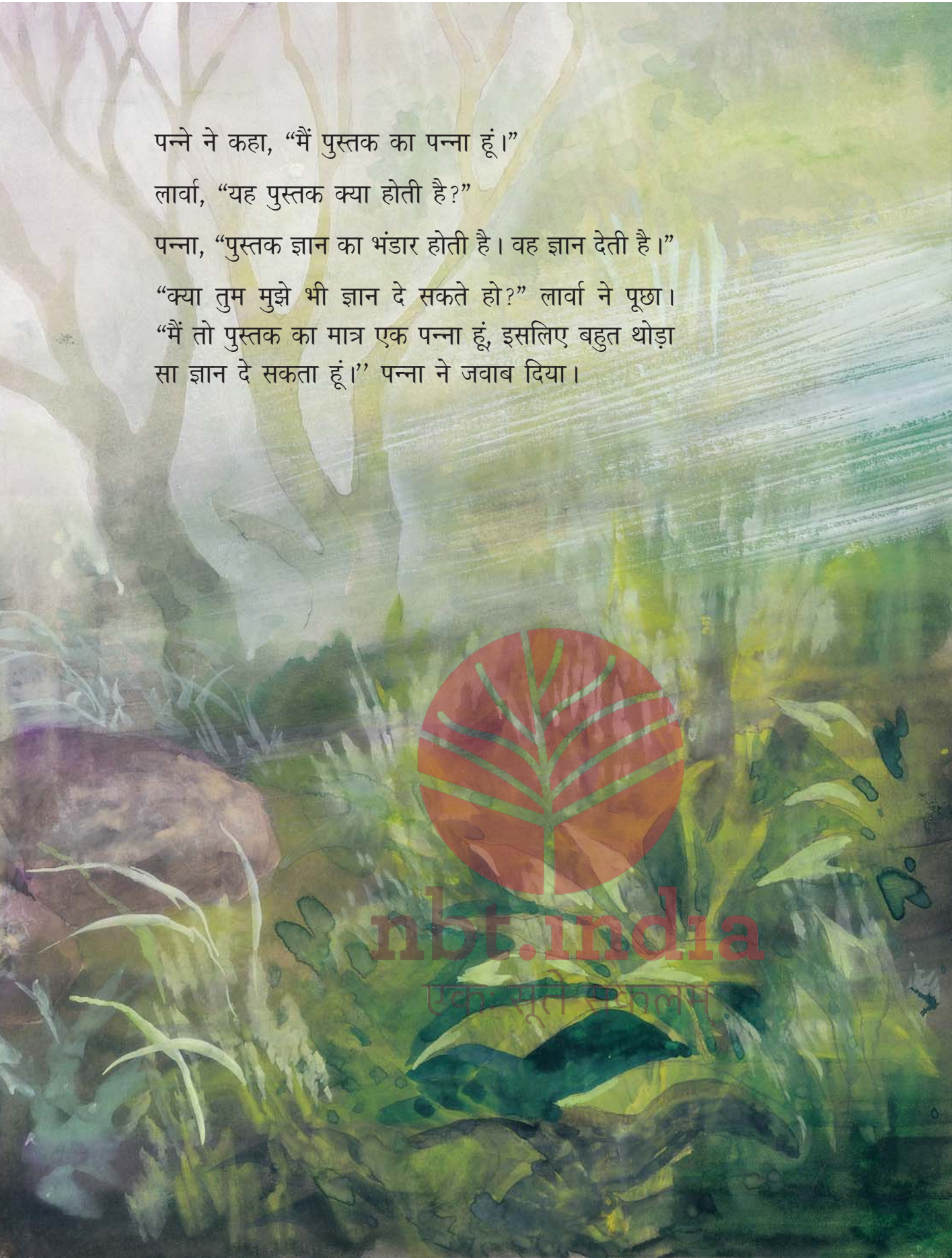

पन्ने ने कहा, “मैं पुस्तक का पन्ना हूं।”

लार्वा, “यह पुस्तक क्या होती है?”

पन्ना, “पुस्तक ज्ञान का भंडार होती है। वह ज्ञान देती है।”

“क्या तुम मुझे भी ज्ञान दे सकते हो?” लार्वा ने पूछा।
“मैं तो पुस्तक का मात्र एक पन्ना हूं, इसलिए बहुत थोड़ा सा ज्ञान दे सकता हूं।” पन्ना ने जवाब दिया।

nbt.india
एकः सूते सकलम्

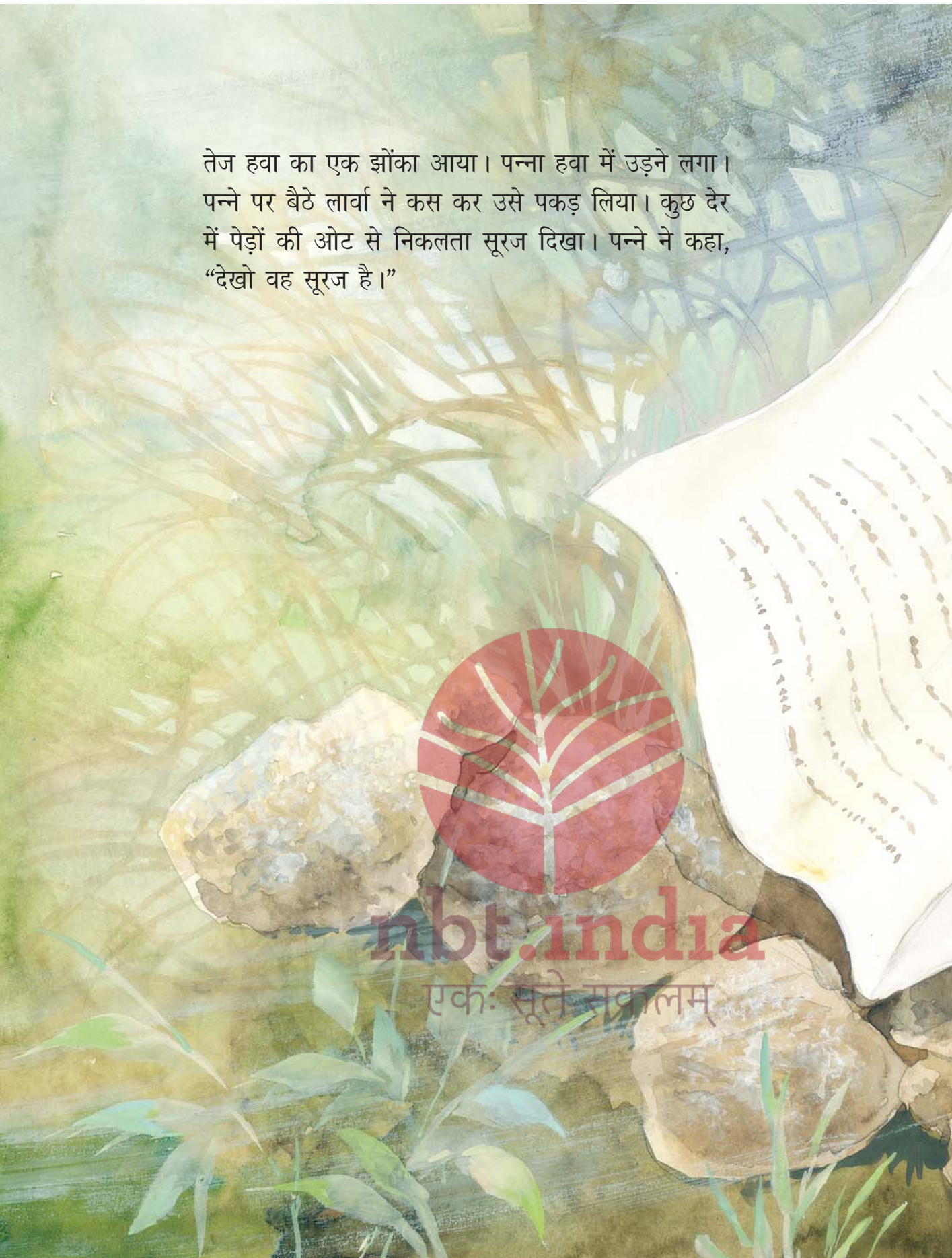

तेज हवा का एक झोंका आया। पन्ना हवा में उड़ने लगा। पन्ने पर बैठे लार्वा ने कस कर उसे पकड़ लिया। कुछ देर में पेड़ों की ओट से निकलता सूरज दिखा। पन्ने ने कहा, "देखो वह सूरज है।"

nbt.india
एकः सूते सकलम्

nbt.india
एकः सूते सकलम्

nbt.india
एकः सूते सकलम्

लार्वा – “जानता हूं। रात के बाद जब सूरज आता है, मुझे बहुत अच्छा लगता है। मौसम में गरमाहट आ जाती है। मैं तो पत्तों पर खुशी से नाचने लगता हूं और एक बात बताऊं? मेरी मां भी मुझे तभी देखने आती है।”

nbt.india
एकः सूते सकलम्

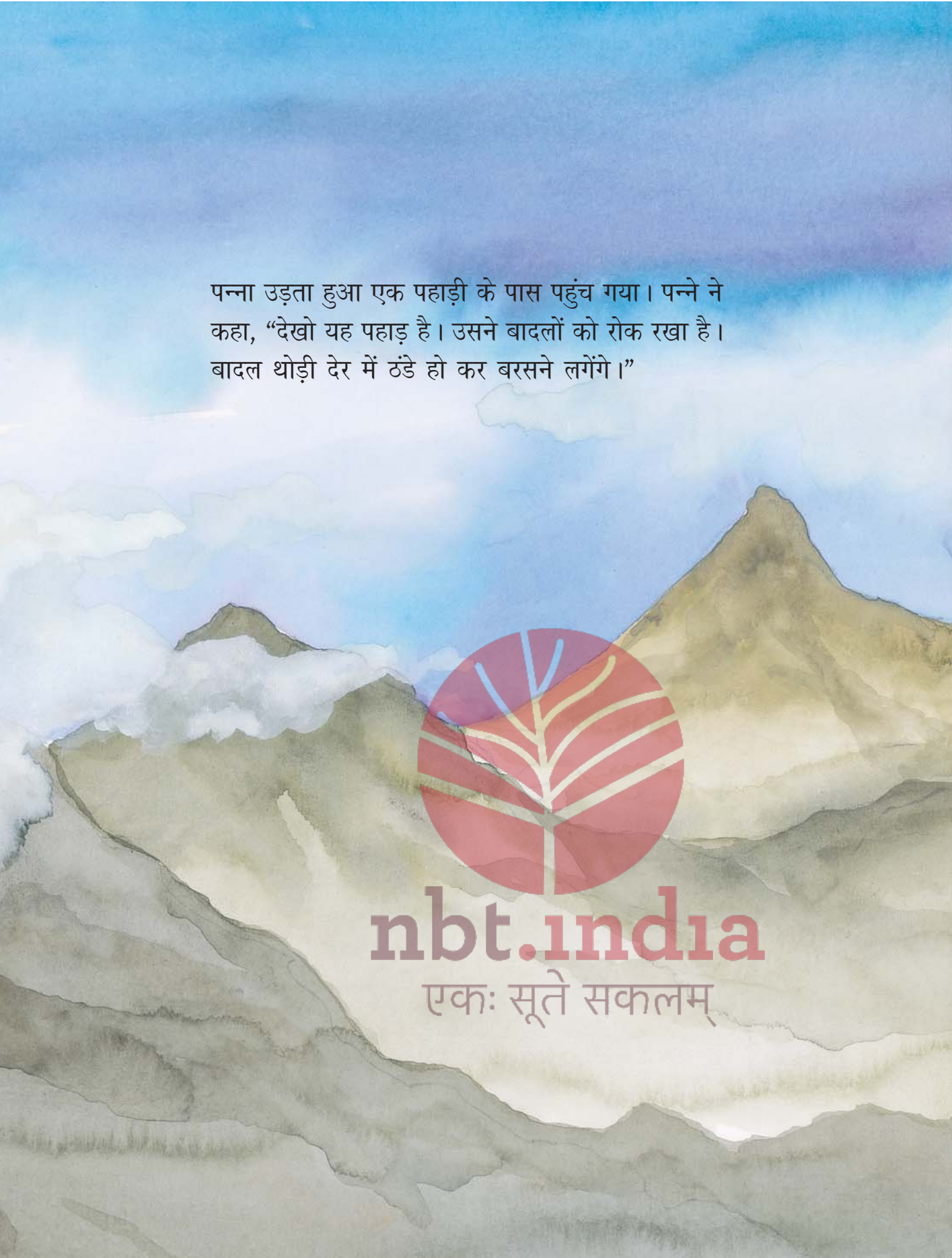

पन्ना उड़ता हुआ एक पहाड़ी के पास पहुंच गया। पन्ने ने कहा, “देखो यह पहाड़ है। उसने बादलों को रोक रखा है। बादल थोड़ी देर में ठंडे हो कर बरसने लगेंगे।”

nbt.india
एकः सूते सकलम्

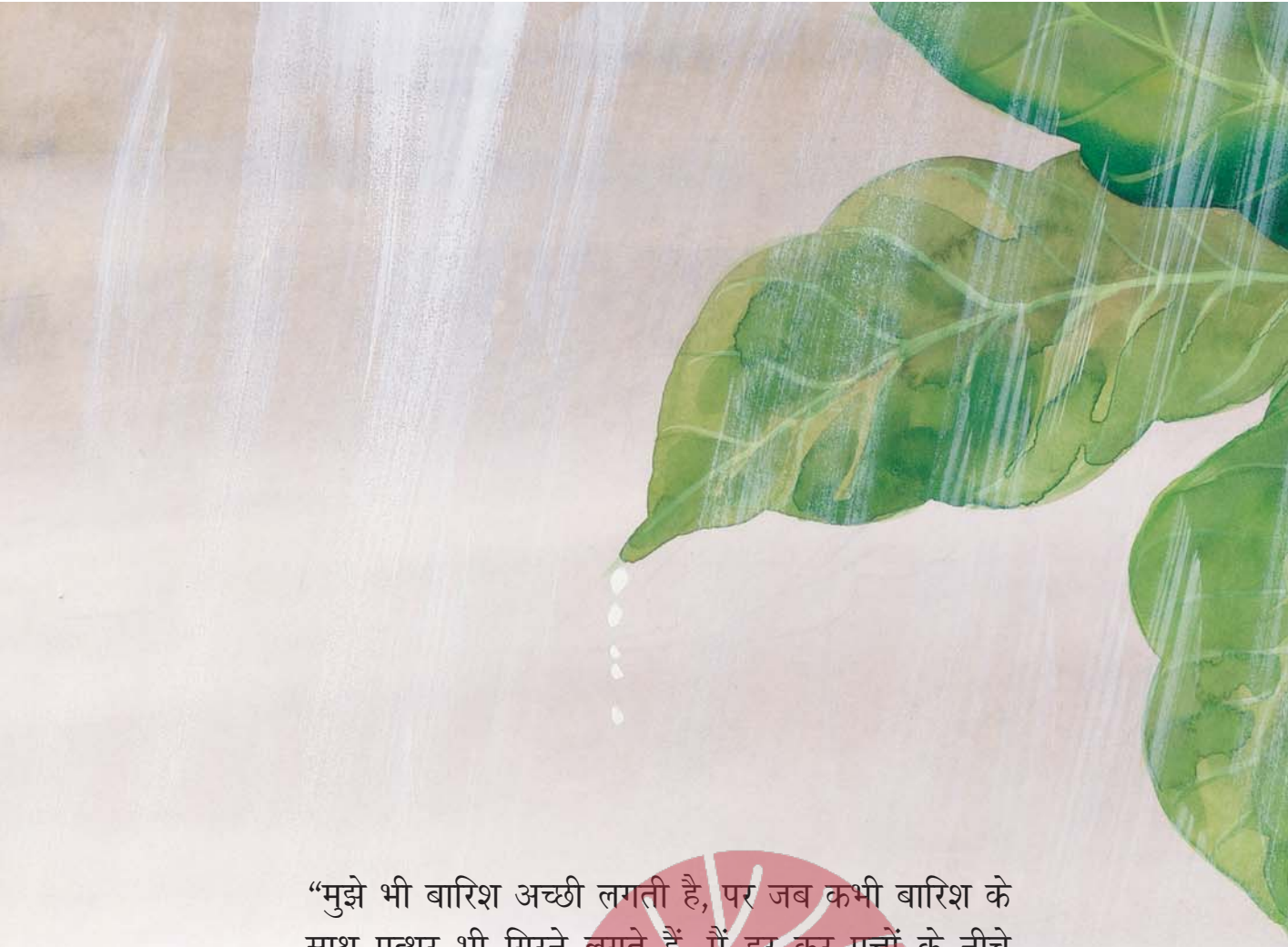

"मुझे भी बारिश अच्छी लगती है, पर जब कभी बारिश के साथ पत्थर भी गिरने लगते हैं, मैं डर कर पत्तों के नीचे छिप जाता हूं।" लार्वा बोला

"अरे भाई वे पत्थर नहीं, बल्कि ठंड से जमा पानी यानी ओले होते हैं।" पन्ने को हंसी आ गई।

nbt.india
एकः सूते सकलम्

nbt.india
एकः सूते सकलम्

पन्ना–“भाई, तुम बोलते बहुत हो। जरा नीचे तो देखो। बारिश का पानी नदी-नालों में बह रहा है। और, वह देखो! किसी बच्चे ने कागज की नाव पानी में बहा दी है।”

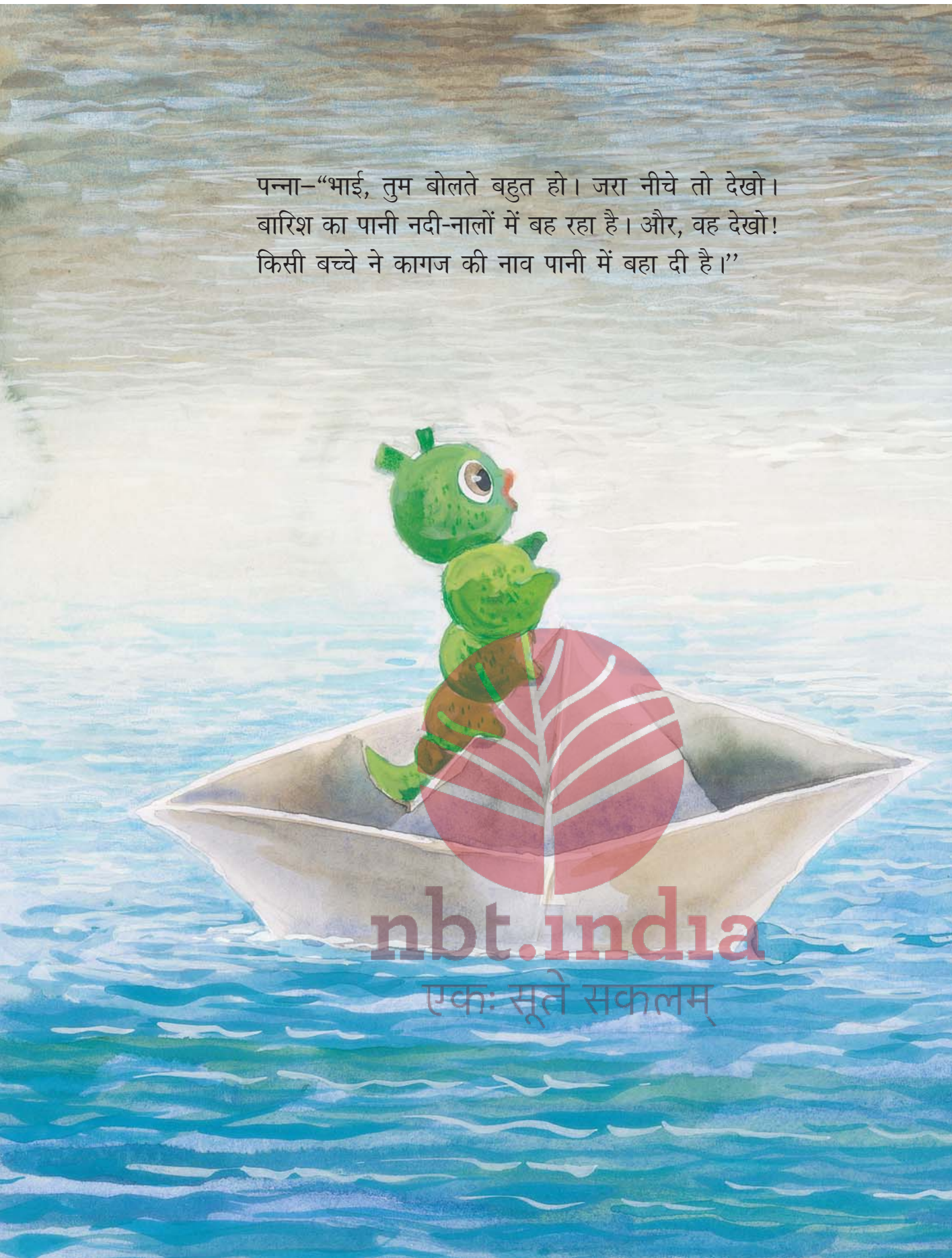

nbt.india
एकः सूते सकलम्

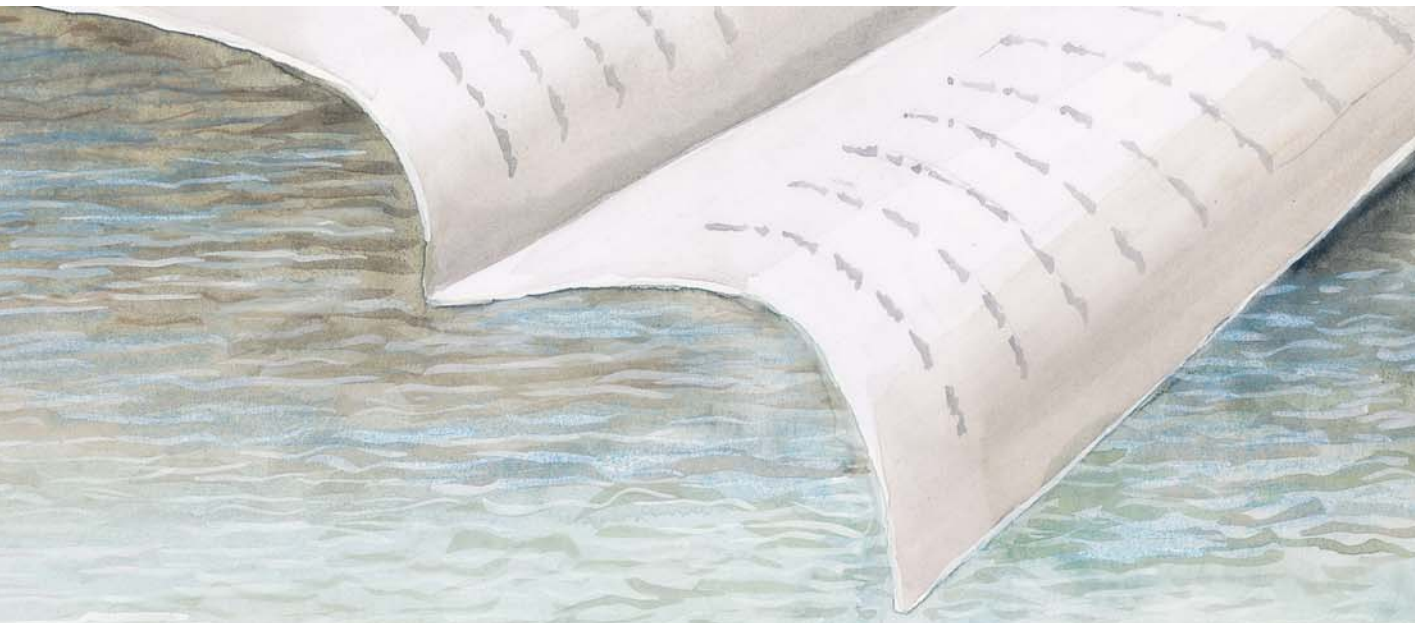

लार्वा ने नीचे देखा, “नाव? ये नाव क्या होती है?”
‘‘यह पानी पर तैरती है। इसमें बैठ कर लोग नदियों में सैर करते हैं।” पन्ने ने बताया।

लार्वा उछल पड़ा, “मैं भी सैर करूंगा इसमें !”

“अच्छा चलो, तुम्हें भी थोड़ी देर सैर करा देता हूं। मगर जरा संभल कर रहना।” पन्ना उड़ते हुए नाव के पास आ गया।

लार्वा ने एक छलांग लगाई और नाव पर चढ़ गया। नाव हिल्लोरे लेते हुए, पानी में आगे बढ़ने लगी। लार्वा को बहुत मजा आ रहा था। पन्ना उसे बार-बार चेतावनी दे रहा था सो उसे फिर से पन्ने पर चढ़ना पड़ा।

nbt.india
एकः सूते सकलम्

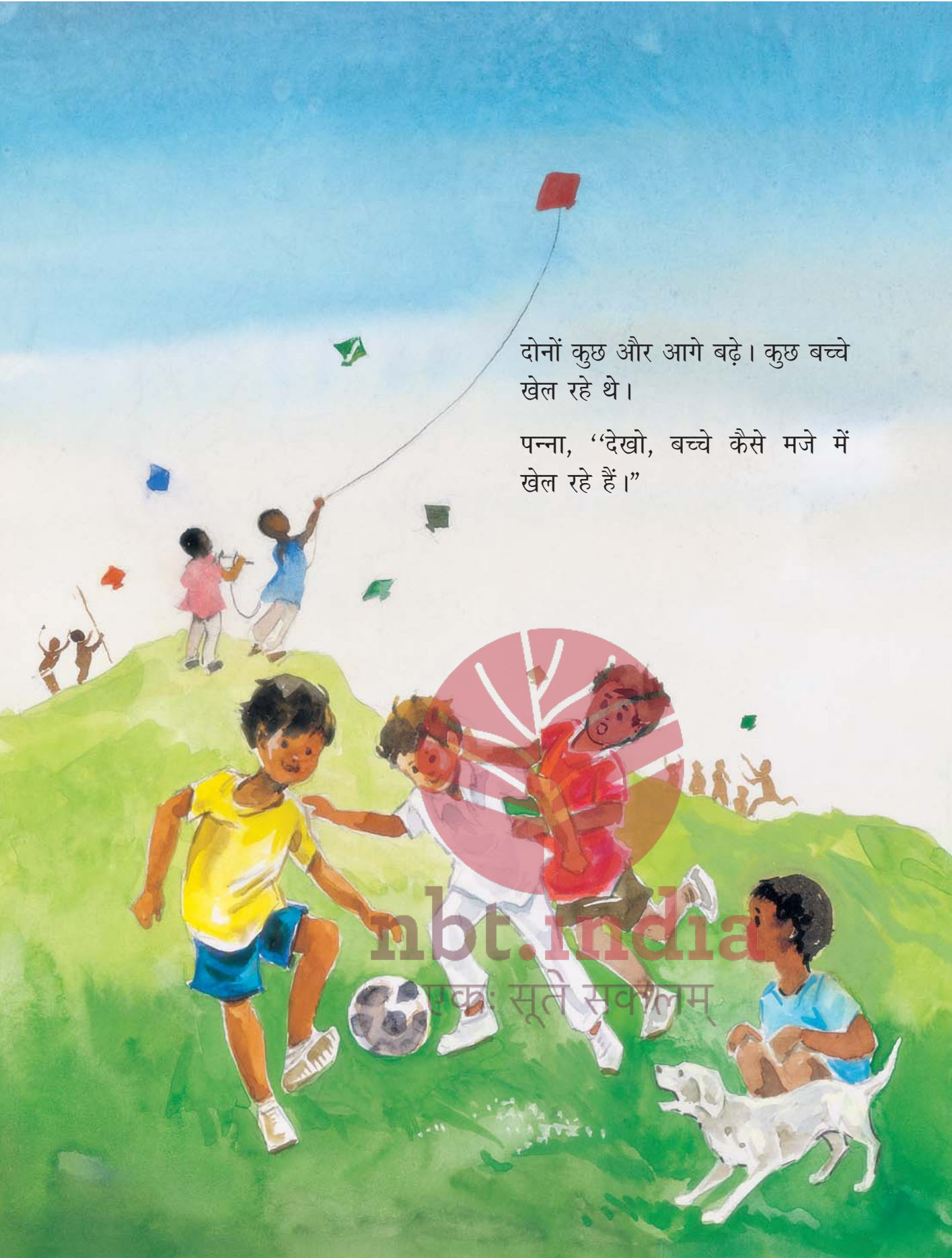

दोनों कुछ और आगे बढ़े। कुछ बच्चे खेल रहे थे।

पन्ना, ''देखो, बच्चे कैसे मजे में खेल रहे हैं।''

nbt.india
एकः सूते सकलम्

लार्वा, “मुझे ये बिल्कुल अच्छे नहीं लगते। ये मेरी मां को बहुत तंग करते हैं। उसे पकड़ने के लिए उसके पीछे-पीछे भागते रहते हैं।”

nbt.india
एकः सूते सकलम्

अचानक लार्वा डरकर पन्ने से चिपट गया। दूर से चिड़ियों का एक झुंड आ रहा था। “अरे, यहां से जल्दी चलो। ये बड़ी शैतान हैं। ये मेरे भाई को चोंच में पकड़ कर ले गई थीं।”

nbt.india
एकः सूते सकलम्

nbt.india
एकः सूते सकलम्

अब वे सेब के एक पेड़ के पास आ गए थे।

“देखो, कितना प्यारा सेब है। यह बहुत मीठा और शक्ति देने वाला फल है। लोग इसे बड़े चाव से खाते हैं।” पन्ने ने बताया।

लार्वा ने हिम्मत जुटा कर पूछ ही लिया, “क्या मैं भी इसे खा सकता हूं? इसे खा कर मैं भी शक्तिशाली बन जाऊंगा?” पन्ना अब तक सेबफल के पास एक डाल पर उतर आया था।

nbt.india
एकः सूते सकलम्

लार्वा भी उछल कर सेब पर चढ़ गया। लार्वा भूखा तो था ही। वह फटाफट सेब खाने लगा। कुछ ही क्षणों के बाद वह सेब के दूसरे छोर से झांक रहा था।

nbt.india

nbt.india
एकः सूते सकलम्

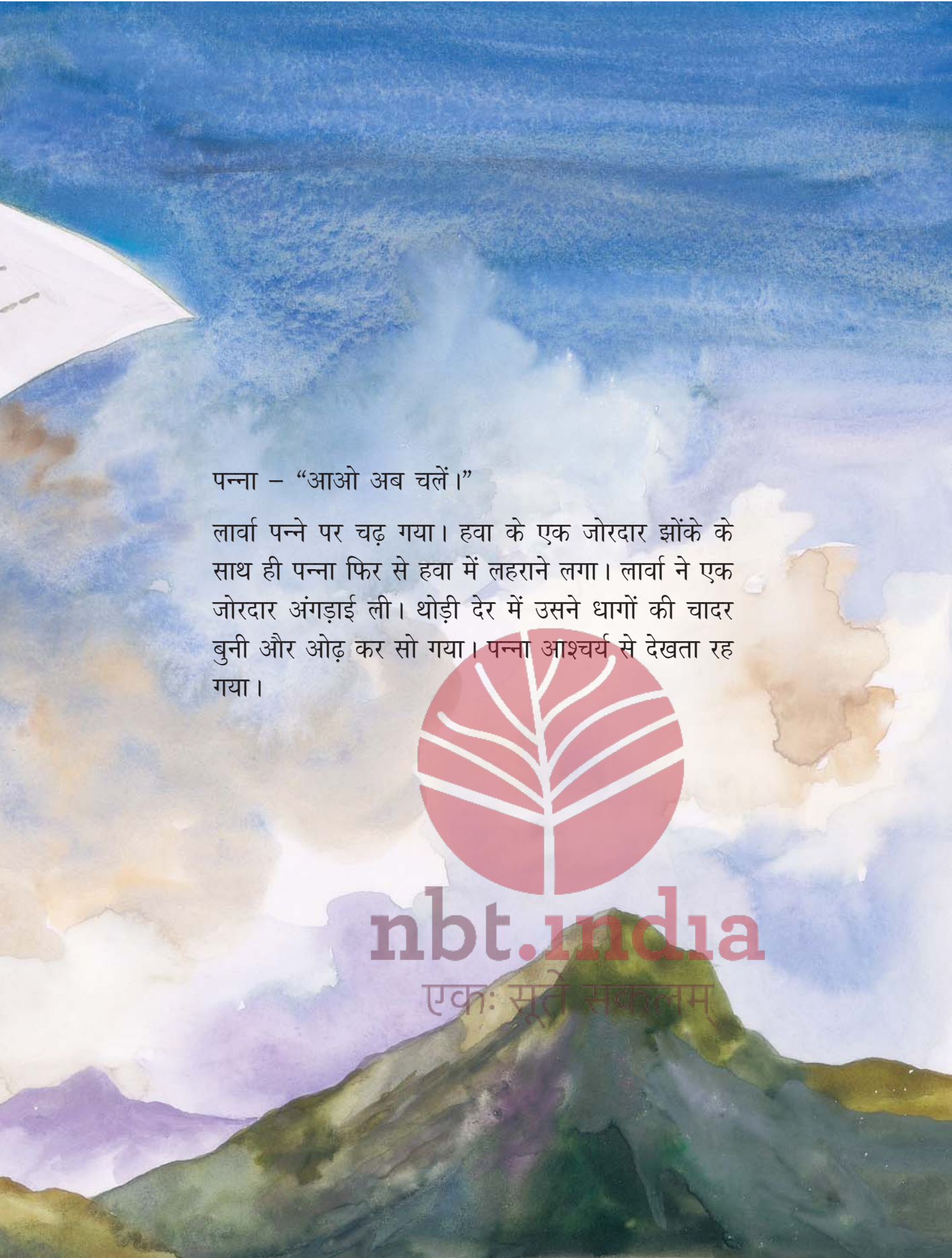

पन्ना – “आओ अब चलें।”

लार्वा पन्ने पर चढ़ गया। हवा के एक जोरदार झोंके के साथ ही पन्ना फिर से हवा में लहराने लगा। लार्वा ने एक जोरदार अंगड़ाई ली। थोड़ी देर में उसने धागों की चादर बुनी और ओढ़ कर सो गया। पन्ना आश्चर्य से देखता रह गया।

nbt.india
एकः सूते सकलम्

अब हवा भी थम गई थी। पन्ना धीरे-धीरे जमीन पर झाड़ियों के पास आ गिरा।

कुछ दिनों बाद लार्वा अपनी चादर से निकला। लेकिन वह तो एकदम बदल गया था! वह अपने नए रूप से बहुत खुश था। कुछ देर तक वह अपने पंख फड़फड़ाता रहा।

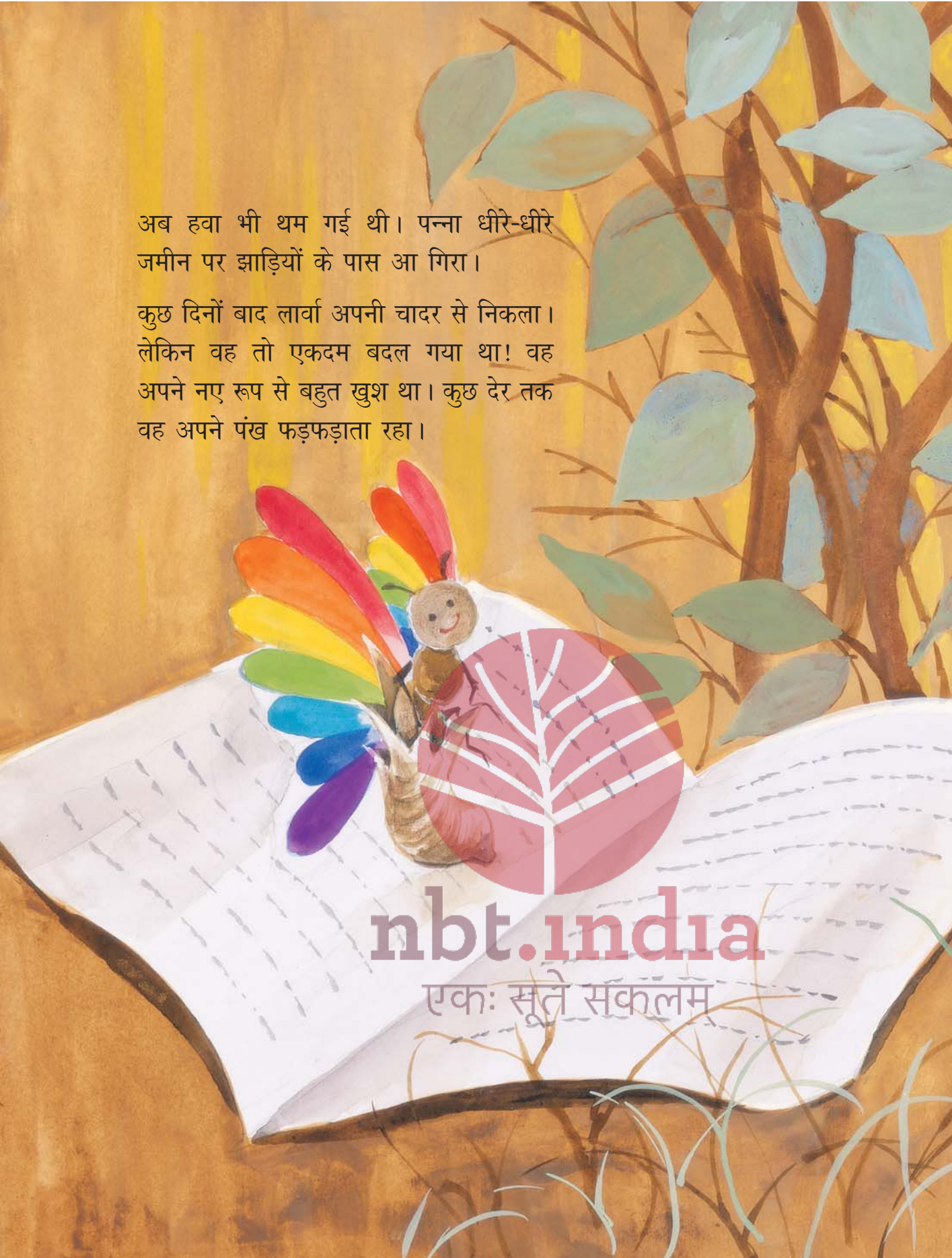

nbt.india
एकः सूते सकलम्

उसने पन्ने को धन्यवाद कहा और एक नए जीवन की शुरूआत के लिए उड़ चला।

किताब का पन्ना भी हवा में फड़फड़ाया, मानो उसे अलविदा कह रहा हो।

nbt.india
एकः सूते सकलम्

nbt.india
एकः सूते सकलम्

अमर उजाला पब्लिकेशंस प्रा. लि., नोयडा द्वारा मुद्रित

nbt.india

एकः सूते सकलम्

ISBN 978-81-237-6394-1

पहला संस्करण : 2012

तीसरी आवृत्ति : 2018 *(शक* 1940*)*

© जगदीश जोशी, 2012

Ek Yaatra *(Hindi)*

₹ 35.00

निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II

वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 द्वारा प्रकाशित

Website: www.nbtindia.gov.in

nbt.india

एकः सूते सकलम्